माया वर्मा के प्रेरक साहित्य की प्रासंगिकता

अजब सिंह
शोधार्थी हिन्दी विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर म.प्र.

साहित्यकारों का मूल उद्देश्य समाज के प्रबुद्ध नागरिकों तक यह संदेश पहुँचाना है कि समाज में जो भी विरक्तियाँ, बुराईयाँ व पारंपरिक रूढ़ियाँ चली आ रही हैं उनके प्रति समाज के प्रत्येक नागरिक को जागरूक होना चाहिए एवं सही व गलत का स्वयं चुनाव कर अपने–अपने जीवन को सरलतम बनाने के प्रयास करना चाहिये। समाज का प्रत्येक नागरिक यदि सत्य, अहिंसा व ईमानदारी की राह अपना ले और यदि दुराचार, झूठ, बेईमानी, अत्याचार व भ्रष्टाचार की राह को त्याग कर प्रेमपूर्वक अपना जीवनयापन करने लगे तो निश्चय ही यह अनुसरणात्मक कार्य होगा तथा सभी मिलकर अज्ञानतम रूपी अंधकार मिटा देंगे, इसके लिये समाज को अपने विवेक व बुद्धि का उपयोग करना होगा।

माया वर्मा जी ने इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति हेतु साहित्य लेखन का कार्य किया। पूर्व में ज्ञातव्य है कि माया जी की लेखनी समाज के प्रत्येक वर्ग व प्रत्येक समस्या के लिये सर उठाती है। माया जी के साहित्य की विशेषता यही है कि उन्होंने समाज की समस्याओं को तो उजागर किया ही है साथ–ही–साथ उन समस्याओं का सरल उपाय भी पाठक वर्ग के सामने प्रस्तुत करने का दायित्वपूर्ण कार्य किया है।

मुख्य बिन्दू–
साहित्यकारों, बुराईयाँ, विरक्तियाँ, प्रबुद्ध, ईमानदारी, बेईमानी, प्रेमपूर्वक, जीवनयापन, अनुसरणात्मक, अज्ञानतम, ज्ञातव्य।

प्रसिद्ध विद्वान अरस्तू का कथन है ष्मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। आवश्यकताओं को देखते हुये कहा जा सकता है कि एक स्वस्थ

समाज वर्तमान समय के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसी विषय में माया वर्मा जी सदैव प्रयासरत रहीं। उनका मानना था कि वर्तमान की भौतिकतावादी जीवन–शैली ने हमारे समाज के मूल ढाँचे को अत्यधिक नुकसान पहुँचाया है। पश्चिम के उपभोगवादी जीवनशैली के अन्धानुकरण ने हमें हमारे सामाजिकदृसांस्कृतिक मूल्यों को लगभग विस्मृत सा कर दिया है।

ऐसे संक्रमण काल में मूर्धन्य कवियित्री माया वर्मा जी के काव्य ने समाज में एक वैचारिक चेतना को जन्म दिया और उनके काव्य के द्वारा पुनर्जागरण की ऐसी लहर का निर्माण किया गया जो समाज के प्रत्येक वर्ग को पथ प्रदर्शित करने का काम करती थी। समाज के कमजोर वर्ग की पीड़ा हो, नारी की पीड़ा हो, प्रत्येक सामाजिक पीड़ा को माया वर्मा जी ने सभी के सामने अपने काव्य के द्वारा लाने का काम किया और रूग्ण समाज का सुधार करने हेतु अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया। माया वर्मा जी ने लगातार ऐसे प्रयास किए जो कि समाज सुधार एवं मानव निर्माण की दिशा में मील के पत्थर साबित हुये और उनके प्रयासों से समाज को अनेक रूपों में लाभ प्राप्त हुआ।

समाज में व्याप्त हर बुराई पर पैनी नजर बनाये रखने का कौशल एवं समाज को इससे बचाने का काम बड़े पैमाने पर माया जी द्वारा होता रहा। उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से अधिकतम सामाजिक संदर्भों से सरोकार रखा। उनके हृदय में सामाजिक पीड़ा का बोध एवं परोपकार की भावना कितनी गहरी थी यह उनकी रचनाओं में स्पष्ट दृ ष्टिगत होती है–

“मैंने तो सबसे अंतर की पीर छिपायी।

पर आँसू कह गये कथा अंतर की सारी ।।

अब सोचा है, भरा न यदि अपना घट– तो क्या?

औरों का घट स्वयं भरेंगे सुख पायेंगे।

अश्रु सूख जायेंगे अपने इसी खुशी में।

समझेंगे–साधना सफल हो गई हमारी।

पर आँसू कह गये..............................।।''[i]

माया जी इस बात से भली भाँति परिचित थीं कि सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन एवं नवयुग निर्माण की दिशा में किये जा रहे ऊपरी एवं सतही प्रयास अधिक समय तक नहीं टिकेंगे। उनके स्थान पर ऐसे प्रयास किये जाने चाहिये। जिनके परिणाम दीर्घकाल तक समाज को लाभान्वित करते रहे। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से नवयुग निर्माण की दिशा में उत्कृष्ट वैचारिक मनोभूमि तैयार करने का सराहनीय प्रयास किया था। माया जी मात्र सामाजिक बुराईयों की ओर इंगित नहीं करती थीं वरन् उनका पूरा प्रयास उन समस्याओं के समाधान पर होता था। वह अपने सामाजिक कर्तव्यों के प्रति अत्यन्त समर्पित महिला थीं और इसी कर्तव्य–बोध से वह प्रत्येक जन को अवगत कराना चाहती थीं।

''हम रूप प्रभु का मानकर, संसार की सेवा करें।

सबसे बड़ा यह काम है

यह ही सुखद अंजाम है

हम दीन–दुर्बल पीड़ितों के कष्ट, हस–हस कर हरें।

कठिनाईयाँ रोके डगर

हो कष्ट में चाहे सफर

हम सामना उनका करें, किंचित नहीं उनसे डरें।।''[ii]

ज्ञातव्य है कि नवयुग निर्माण की प्रक्रिया अत्यन्त दीर्घसूत्री है। वैचारिक चेतना को परिवर्तित करने में समय लगता हैं। माया जी इस तथ्य को भली–भाँति जानती थीं। किन्तु हिम्मत न हारने का संदेशा देते हुये वह लिखती हैं–

''नष्ट प्राय मंदिर को नूतन जीवन दो, विकसाओ

अगर गिर रही हैं दीवारें फिर से उन्हें उठाओ

इनमें जागे प्राण, आस्थाएँ, नवजीवन पाएँ

इन्हीं खण्डहरों में हम फिर से चारों धाम बनाएँ

सिन्धु पाटने का संकल्प स्वयं पत्थर ढोता है।।''[iii]

माया वर्मा जिन्होंने समाज के प्रति अपना दायित्व निर्वाह करते हुए समाज को एक नयी दिशा दी। वे नारी सम्मान की प्रबल संरक्षक रही हैं। इन्होंने नारी को समाज में सम्मान व समान अधिकार दिलाने का हर संभव प्रयत्न किया है। माया जी समाज के प्रत्येक वर्ग से जुड़ाव महसूस करती थीं और चूँकि वे भी इसी समाज से तादात्म्य रखती थीं। अतः वे नारी की पीड़ा को व सामाजिक बुराईयों की प्रत्यक्षदर्शी रही हैं। उन्होंने समाज में नारी की जो दुर्दशा देखी उससे उनका मन आहत हुआ और जैसा कि हमने सुना है–

वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकला होगा गान

यह पंक्ति माया वर्मा के साहित्य के द्वारा चरितार्थ होती है। उनके शब्दों में–

सनातन सत्य शाश्वत शिव

सतत् सौन्दर्य है नारी

उसी की चेतना पे जी रही है मनुजता सारी।।

माया जी लिखती हैं कि नारी केवल जननी मात्र नहीं है वरन् वह पुरूष की पोषक व निर्माता भी है। नारी ही है जो एक बालक की प्रथम शिक्षिका है और जो सांसारिक जीवन को सरलतम रूप में बालक को समझाती है तथा जीवन मूल्यों को संस्कारों के रूप में अगली पीढ़ी को विधिवत् हस्तांतरित करती है। नारी का ममतामयी स्वभाव कहीं–कहीं नारी के लिए कष्टदायक होता गया और पुरुष के लिये नारी केवल उपभोग की वस्तु बनकर रह गयी।

माया वर्मा जी को नारियों की घुटन का अहसास हुआ और उन्होंने अंधविश्वास, अज्ञान, अशिक्षा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, रूढ़िवाद आदि कुप्रथाओं के विरोध में अपनी लेखनी को शब्द दिये। उन्होंने नारी की स्थिति को निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा बताने का प्रयत्न किया है, साथ ही नारी की सामाजिक जिम्मेदारियों व नारी के विभिन्न रूपों का चरित्र चित्रण किया है।

आज के नारी उत्थान के युग में कवयित्री माया वर्मा जी की कविताएँ शक्ति सम्पन्न हैं, में उनमें ऊर्जा के संस्कार हैं। नारी जागरण की उनकी कविताएँ समाज का दर्पण हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा समाज में नारी की स्थिति को सम्वेदित और सहज तथा सरल अभिव्यक्ति प्रदान की है। माया जी ने नारी जागरण के काव्य में जो कुछ भी कहा है वह पूर्ण रूप से निर्मल और पवित्र है। उनकी विषय विशेष की रचनाएँ प्रेरणा देती हैं कि उन्हें पढ़कर समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं का आंकलन करे और अपने आचरण का परीक्षण करे। ष्क्या कर सकती नहीं नारियाँश शीर्षक कविता में माया वर्मा जी वर्तमान युग की नारी को प्रेरित करते हुए लिखती हैं–

"देना मत इनको कोई अब अबला कहकर गाली।

ये भी हैं आ पड़ने पर तलवार चलाने वाली।।

अब न सहेंगी ये पशुता का वह दासत्व पुराना।

पहन रहीं हैं अब तो ये भी स्वाबलम्ब का बाना।"[iv]

माया जी की रचनाएँ समाज की पोल उजागर करती हैं। उनके अनुसार वर्तमान में भी नारी मात्र शोषित, पीड़ित व दमित है। आज भी देश के विभिन्न हिस्से में बेटा और बेटी का अन्तर है और समाज के लोग बेटे के जन्म को बहुत महत्व देते हैं, अतः रूढ़िवादिता के चलते बेटा न होने पर एवं पत्नी के जीवित होने पर भी पुरूष की दुबारा शादी रचाई जाती है और जनसंख्या में वृद्धि जारी है जिससे नारी का आत्मिक बल कमजोर होता गया है, और वह स्वयं को अबला एवं पीड़ित मानने लगी है। ऐसी ही आज की नारी को असीम शक्तिवान् व क्षमतावान् बनने की प्रेरणा देती हुई माया जी कहती हैं–

"तुम चरण बढ़ाओ अभय शूल हट जायेंगे।

पग धूलि पड़ेगी जहाँ–फूल खिल जायेंगे।।

पहले–पहले पद–चिन्ह तीर्थ बन जायेंगे।

अनुगामी बनने, पीछे लाखों आयेंगे।।"[v]

माया वर्मा जी नारी को हिम्मत व हौसला देती हुई कहती हैं कि भारत की नारी शक्ति भी है और करूणा की मूर्ति भी, जो दमित भी है और सशक्त भी। ईश्वर का कोई रूप नहीं, बस ममता का स्वरूप है नारी, हर मुश्किल से सबको बचाती, कुदरत का वह नूर है नारी । निश्चय ही इन पंक्तियों को पढ़कर नारी स्वयं के अस्तित्व को बचाने

के लिये खड़ी होगी और स्वयं को शक्तिवान् एवं क्षमतावान् सिद्ध कर देगी जैसा कि माया जी ने उपर्युक्त कविता की पंक्तियों में लिखा है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि हर सफल नर के पीछे एक नारी का ही हाथ है इसीलिये नर–नारी को बराबर अधिकार देना चाहिए। इस संदर्भ में कवयित्री नारी को सम्बोधित करते हुए कहती हैं कि आज के युग में बिना माँगे कुछ नहीं मिलता, इसलिये अपने जायज अधिकारों की मांग करो। स्वयं के लिये अधिकार मांगने को प्रेरित करते हुए वे लिखती हैं–

"बहुत कर ली मीठी मनुहार,

नारियों! माँगो अब अधिकार।।"[vi]

संदर्भ सूची

[i] माया वर्मा, अंतर्व्यथा, जीवन सुरभि, पृष्ठ–15

[ii] माया वर्मा, दीप निष्ठा का धरें, संजीवनी, कृति प्रकाशन, पृष्ठ–23

[iii] माया वर्मा, सिंधु पाटने का संकल्प स्वयं पत्थर ढोता है, जीवन सुरभि, पृष्ठ–23

[iv] माया वर्मा, क्या कर सकती नहीं नारियाँ, जीवन सुरभि, पृष्ठ–80

[v] माया वर्मा, जागो प्रहरी, संजीवनी, कृति प्रकाशन, पृष्ठ–45

[vi] माया वर्मा, जागृति गीत, पृष्ठ–8

Contributors Details:

अजब सिंह
शोधार्थी हिन्दी विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर म.प्र.